हर्षवर्धन

पुष्यभूति वंश

पुष्यभूति वंश ने 6वीं-7वीं शताब्दी ईस्वी में भारत के उत्तरी क्षेत्रों पर शासन किया। राजा हर्षवर्धन पुष्यभूति वंश के सबसे प्रमुख शासक थे।हर्ष के शासनकाल में, पुष्यभूति साम्राज्य का विस्तार उत्तर और उत्तर-पश्चिम भारत के अधिकांश हिस्सों तक फ़ैल गया था।यह साम्राज्य पूर्व में कामरूप तक और दक्षिण में नर्मदा नदी तक फैला हुआ था।बाणभट्ट द्वारा रचित 'हर्षचरित' के अनुसार, इस वंश की स्थापना पुष्यभूति ने की थी, जो भगवान शिव के भक्त थे।

इतिहासकारों का मानना है कि, पूर्वी भारत में स्थित उनके पड़ोसी मौखरियों की तरह, पुष्यभूतियों ने भी गुप्त साम्राज्य के पतन का लाभ उठाया और स्वतंत्र होकर एक नए राज्य और वंश की स्थापना की।पुष्यभूति साम्राज्य की राजधानी स्थानेश्वर (आधुनिक थानेसर) मानी जाती है।इस वंश के बारे में विस्तृत जानकारी चौथे शासक प्रभाकरवर्धन के शासनकाल से मिलती है। जिसने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की थी।प्रभाकरवर्धन ने उत्तर-पश्चिम भारत से आने वाले हूण आक्रमणकारियों से संघर्ष किया।प्रभाकरवर्धन के दो पुत्र राज्यवर्धन और हर्षवर्धन और एक पुत्री थी, राज्यश्री, जिसका विवाह पूर्व में उल्लेखित मौखारी वंश के गृहवर्मन से हुआ था।प्रभाकरवर्धन की मृत्यु के बाद, राज्यवर्धन ने सिंहासन संभाला।गृहवर्मन की हत्या मालवा के एक बाद के गुप्त राजा ने कर दी थी, जिसने राज्यश्री का भी अपहरण कर लिया।इस घटना के परिणामस्वरूप, राज्यवर्धन ने मालवा के राजा पर चढ़ाई की और उसे पराजित कर दिया। लेकिन थानेसर लौटते समय, उन्हें 'शशांक' गौड़ के राजा ने धोखे से मार डाला।इस घटना के पश्चात हर्षवर्धन का राज्याभिषेक पुष्यभूति शासक के रूप में हुआ, जो 6वीं-7वीं शताब्दी ईस्वी में भारत के सबसे महान शासकों में से एक सिद्ध हुए।

राजा हर्षवर्धन, प्रभाकरवर्धन के द्वितीय पुत्र थे और पुष्यभूति वंश के सबसे प्रमुख शासक माने जाते हैं। उन्होंने 606 ईस्वी से 647 ईस्वी तक 41 वर्षों तक कन्नौज को राजधानी बनाकर शासन किया गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद, राजा हर्षवर्धन उत्तरी भारत के बड़े हिस्से को अपने नियंत्रण में लाने में सफल रहे, उनका शासन वर्तमान पंजाब, बंगाल और ओड़िशा राज्यों तक फैला हुआ था और संपूर्ण गंगा-यमुना के

मैदानी क्षेत्रों को समाहित करता था, जिसकी दक्षिणी सीमा नर्मदा नदी तक थी।सिंहासनारूढ़ होने के बाद, उन्होंने थानेसर (आधुनिक कुरुक्षेत्र क्षेत्र) और कन्नौज के राज्यों को एकजुट किया। अपने प्रत्यक्ष नियंत्रण वाले क्षेत्रों के अलावा, उनका प्रभाव उनके साम्राज्य की सीमाओं से कहीं आगे तक फैला हुआ था। ऐसा प्रतीत होता है कि सीमावर्ती राज्यों ने उनकी प्रभुता को स्वीकार कर लिया था। पूर्वी भारत में उन्हें गौड़ के शैव राजा शशांक का विरोध झेलना पड़ा, जिसने बोधगया में बोधि वृक्ष को कटवा दिया था। परंतु शशांक की मृत्यु के साथ यह शत्रुता समाप्त हो गई।दक्षिण भारत में कर्नाटक और महाराष्ट्र के अधिकांश भागों पर शासन करने वाले चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने नर्मदा नदी पर हर्ष के दक्षिणवर्ती अभियान को रोक दिया।उनके शासनकाल का विस्तारपूर्वक वर्णन उनके राजकवि बाणभट्ट द्वारा रचित हर्षचरित में मिलता है तथा चीनी यात्री ह्वेनसांग (Xuanzang / ह्यूएनसांग) द्वारा भी उनकी यात्रा व उनके शासन का उल्लेख किया गया है।

हर्षवर्धन के शासन के दौरान बौद्ध धर्म

हर्ष के सिंहासन पर बैठने के दौरान बौद्ध धर्म के पारंपरिक रूपों में गिरावट आई। इस अवधि में बौद्ध धर्म के वैदिक और महायान संप्रदायों के बीच एक संश्लेषण देखा गया राज्य के कई हिस्सों में भगवान बुद्ध की मूर्ति पूजा अभी भी प्रचलित थी बाद में, बौद्ध भिक्षु ह्वेनसांग के आगमन के बाद, हर्ष बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय का एक भक्त अनुयायी बन गया। कन्नौज और प्रयाग में उनकी दो सभाएँ उनके राज्य में बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने के लिए प्रदर्शनियाँ थीं।हर्ष ने बौद्ध भिक्षुओं के लिए अपने राज्य में हज़ारों स्तूप बनवाए और यात्रियों के लिए विश्राम स्थल भी बनाए।